International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2015, Vol. No. 5, Issue No. IV, Oct-Dec e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671

तमस: साम्प्रदायिक विद्वेष का कटु यथार्थ

डा. मनिन्द्र जीत कौर

व्याख्याता हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

THE BITTER REALITY OF 'TAMAS': COMMUNAL HATRED

Dr Maninder Jeet Kaur

Lecturer, Dept of Hindi, Government College, Suratgarh, Shriganganagar

IJRSSH

ABSTRACT

Bhisham Sahni's 'Tamas' is a link in the tradition of novels based on communal problems. Bhsahm Shani has given an intimate account of the naked dance of brutality that tookplace in the country just before independence, using communalism as a crutch. In terms of time span, this novel is a story of only five days. In this novel, the author has depicted every aspect of communalism. The timeperiod of the story is five days and the events take place in Amritsar and its surrounding villages. The work is a reliable expose of this communal poison. The problem of communalism in India is age-old, and the country has yet to be liberated from its domestic claws. Before independence, foreign rulers used this problem as a tool to strengthen the foothold here, and after independence, some political parties in our country are expoitiing it in a despicable manner. The victims of this devastation have been those innocent and poor people who are neither Hindu nor Muslim, but human beings and Indian citizens.

Keywords: *Bhisam Sahni; partition; communcalism; refugees; disturbance.*

सारांष

साम्प्रदायिक समस्या पर आधारित उपन्यासों की परम्परा में एक कड़ी है– भीष्म साहनी का 'तमस'। स्वतंत्रता से ठीक पहले साम्प्रायिकता को बैसाखियां बनाकर पाशविकता का जो नंगा नाच देश में हुआ उसका अन्तरंग परिचय भीष्म साहनी ने तमस में दिया है। काल विस्तार की दृष्टि से केवल पाँच दिनों की कहानी इस उपन्यास में है। जिसमें लेखक ने साम्प्रदायिकता के हर पहलू को चित्रित किया है। ''कहानी की कालवधि पांच दिन की है और घटना अमृतसर और उसके आस–पास के गांवों की। रचना इस साम्प्रदायिक विष– वमन का विश्वसनीय दस्तावेज है।''[1] भारत में

साम्प्रदायिकता की समस्या एक युग पुरानी है और इसके दानवी पंजों से अभी तक इस देश की मुक्ति नहीं हुई है। ‘‘आजादी से पहले विदेशी शासकों ने यहाँ की जमीन पर अपने पांव मजबूत करने के लिये इस समस्या को हथकंडा बनाया था और आजादी के बाद हमारे देश के कुछ राजनीतिक दल इसका घृणित उपयोग कर रहे है और इस सारी प्रक्रिया में जो तबाही हुई है उसका शिकार बनते रहे है वे निर्दोष और गरीब लोग जो कि न हिन्दू है न मुसलमान बल्कि इन्सान हैं और भारतीय नागरिक ।’’[2]

शब्द : भीश्म साहनी, विभाजन, साम्प्रादियकता, रिफ्यूजी, फसाद।

प्रस्तावना

उपन्यास की कथावस्तु को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। पहले खण्ड में 13 प्रकाश है जिसमें शहर के वातावरण को चित्रित किया गया है। उपन्यास का प्रारम्भ एक गरीब चमार नत्थू द्वारा एक बंद कमरे में पैसे के लिये एक सुअर मारने से होता है। नत्थू ने कभी सुअर मारा नहीं है, वह केवल मरे जानवर की खाल उतारता है। सुअर अपने बचाव के लिये नत्थू पर प्रहार करता है। जान लेने और जान बचाने की इस घटना को आगामी घटनाक्रम का प्रतीक बनाकर लेखक ने इसे अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। लेकिन अगले दिन वही सुअर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंका हुआ मिलता है। नत्थू चमार अपने आपको दोषी मानने लगता है। लेकिन वह समझ नहीं पाता कि सालोतरी साहब ने ऐसा क्यों किया। मस्जिद की सीढ़ियों पर सुअर की लाश पाकर मुस्लिम लोग चिढ़ जाते है और ऐसे ही तनावपूर्ण समय में बदले की भावना से एक गाय को मार दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप शहर के हालात साम्प्रदायिक हो उठते है। मुस्लिम लोग एक तरफ हो जाते है और कट्टरपंथी हिन्दुओं का एक गुट बन जाता है। अंग्रेज इस संघर्ष को होते हुये चुपचाप देखते है। लेकिन कोई भी कार्य साम्प्रदायिक दंगों को दबाने का नहीं करते। कांग्रेस के सदस्य इस दिशा में कार्य करते है। इस समय कई शक्तियां सिर उठाये हुई थी जिनमें मुस्लिम लीग के प्रतिक्रियावादी कार्य तथा हिन्दू कट्टरपंथी प्रमुख रूप में है। कट्टरपंथी हिन्दू युवकों को इकट्ठा कर अस्त्र शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण देते हैं और मुस्लिम विरोधी

IJRSSH

कार्यों को अंजाम देते हैं। अनके स्थानों पर हत्याएं हो रही हैं और दुकानें जलाई जा रही है। धार्मिक नेता इस अलगाव की आग को और अधिक भड़का रहे हैं। ''मुहल्लों के बीच सीमायें खिंच गई थीं। हिन्दुओं के मुहल्लों में मुसलमानों के जाने की अब हिम्मत नहीं थी और मुसलमानों के मुहल्लों में हिन्दू सिक्ख अब नहीं जा सकते थे। ऑखों में संशय और भय उतर आये थे।''[3] चारों तरफ नफरत और संशय का वातावरण पैदा हो गया था। कांग्रेस पार्टी का जनरैल अपना भाषण दे रहा था ''साहिबान आप शहर में अमन बनाये रखे। यह शरारत अंग्रेजों की है जो भाई–भाई को आपस में लड़ाता है।[4] कम्युनिस्ट पार्टी का देवदत्त भी अपने तरीके से इस साम्प्रदायिक तनाव को कम करने की चेष्टा करता है। शाहनवाज अपने मित्र को बचाने का प्रयास करता है और उसे अपने मकान में परिवार सहित लाकर रखता है और उसके गहनों का डिब्बा भी सुरक्षित उन तक पहुँचा देता है लेकिन वह उनके नौकर को मार देता है। कहीं न कहीं वह भी हिन्दुओं से नफरत करता था या मुसलमानों पर हुये अत्याचारों से उसके मन में दबी हुई घृणा की भावना उनके नौकर पर निकलती है जो कि हिन्दू है– ''शाहनवाज ने सहसा ही मिलखी की पीठ में जोर से लात जमायी । मिलखी लुढ़कता हुआ गिरा और सीढियों के मोड़ पर सीधा दीवार से टकराया तो वह बेहोश हो गया और या उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई।''[5] मुरादअली जिसने इस साम्प्रदायिक दंगों को मस्जिद पर सुअर फिकवाकर बढ़ाया है, वह मुस्लिमों को और उकसा रहा है। इस प्रथम खंड में डेढ़ से दो दिनों की स्थिति को उजागर किया गया है।

दूसरे खण्ड में शहर के आस पास के गाँवों में हो रही साम्प्रदायिक घटनाओं का विवेचन किया गया है। शहर में हो रहे दंगों का प्रभाव गाँवों में भी होता है और वहाँ का माहौल साम्प्रदायिक हो उठता है। गाँवो में मुसलमान अधिक थे और हिन्दुओं और सिक्खों की संख्या कम थी। इस कारण मुसलमानों का कोप इन अल्पसंख्यकों पर कहर बनकर टूटा। ढोक–इलाही बक्ष गाँव में हरनाम सिंह और बन्तो नाम के वृद्ध दम्पति को इस स्थिति में दंगों से बचने के लिये गॉव छोड़ना पड़ता है। वे पीछे

मुड़कर देखते हैं तो उनका घर धू–धू करके जल रहा होता है और लोग उसकी दुकान को लूटने में लगे हुऐ होते हैं। वे वहाँ से भागकर आगे किसी गाँव के घर में शरण लेते हैं तो वह घर मुसलमानों का होता हैं। वहाँ वे भी वे डरकर समय व्यतीत करते है और राजो नाम की मुस्लिम स्त्री उनकी सहायता करती हैं। उनके बेटे इकबाल सिंह को जो कि इस समय दूसरे गाँव में है उसको जबरदस्ती मुसलमान बनाया जाता है– ''शाम ढलते–ढलते इकबाल सिंह के शरीर पर से सिक्खी की सब अलामतें दूर कर दी गयी थी और मुसलमानों की सभी उतर आई थी।'[6] इसी तरह जसबीर जो कि हरनाम सिंह की लड़की है वह अपने गाँव में मुसलमानों से बचने के लिये सिख स्त्रियों के साथ कुएं में कूदकर अपनी मान मर्यादा की रक्षा करती हैं। इस तरह हर जगह दंगें होते है और लोग मानवता भूलकर एक दूसरे को मारकाट रहे हैं।

इस प्रकार पांच दिन तक लगातार रक्तपात होता है तो उसके बाद सरकार द्वारा कदम उठाया जाता है और शहर में कर्फ्यू लगा दिया जाता है। चारों ओर नीरवता है, सड़ती हुई लाशों की बदबू है तथा लाखों लोग बेघर हो जाते हैं। जगह–जगह रिफ्यूजी कैम्प खोले जाते है और अमन चैन लाने के लिये कमेटियां बनाई जाती है। अंग्रेजों की कूटनीतिक चाल का पर्दाफाश करते हुये कांग्रेसी बक्षी जी ने कहा– ''इस वक्त हालात नाजुक है। अगर मारकाट शुरू हो गई तो उसे संभालना कठिन होगा। अगर एक हवाई जहाज ही शहर के ऊपर उड़ा दिया जाये तो लोगों के कान हो जायेंगे कि सरकार बाखबर है। फिसाद को रोकने के लिये इतना ही काफी है।''[7] लेकिन इनकी कोई सुनवाई नहीं होती और जब दंगे फसाद हो जाते हैं, उसके बाद अंग्रेज सरकार द्वारा राहत कार्य किये जाते हैं। साहनी जी का यह उपन्यास विभाजन से पूर्व जो जातिगत संघर्ष हुआ और उस संघर्ष में हिन्दुओं, मुसलमानों, कांग्रेस तथा अंग्रेज सरकार ने क्या नीतियां अपनाई। उन सभी का इसमें विवेचन किया गया है। किस कारण से ये दंगे प्रारम्भ हुये? और आम आदमी पर इन दंगो की क्या प्रतिक्रिया हुई, उसका विश्लेषण किया गया है। भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में विभिन्न दलों

IJRSSH

की भागीदारी को दिखाया है कि किस प्रकार इन दलों ने साम्प्रदायिक विद्वेष को बढ़ाने की चेष्टा की है।

कांग्रेस की विचार धारा :

विभाजन से पहले कांग्रेस ने अपना प्रभाव विस्तृत रूप में फैला रखा था। गाँधी जी का पूरे देश में प्रभाव था। शहर के लोग अहिंसा की नीति पर चलते हुये गाँधी जी का अनुसरण कर रहे थे। रोज सवेरे प्रभातफेरी निकाली जाती थी शहर की गन्दगी को साफ करते थे, चरखा चलाना आदि कार्य कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा किये जाते थे। ये कांग्रेसी सभी सम्प्रदायों में एकता बनाये रखने का प्रयास करते थे। कांग्रेस में शामिल लोग सभी जातियों से थे। जिनमें अजीज बख्शीजी, मास्टर रामदास, मेहताजी, शंकर, अजीज सिंह, अब्दुलगनी, देसराज, कश्मीरीलाल तथा जरनैल थे। ये लोग शहर में अमन चैन लाने के लिये प्रयास करते रहते थे ''कांग्रेस सबकी जमात है। हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की।[8] जब मस्जिद के आगे सुअर फेंकने की घटना घटित होती है तो जरनैल कहता है–''अंग्रेज ने फेंका है। उसके नथुने फड़कने लगे और वह चिल्ला कर बोला अंग्रेज की शरारत है। मैं जानता हूँ।[9] बख्शी जी और उनके साथी मिलकर मस्जिद के आगे से सुअर की लाश उठवा देते हैं। और सीढ़ियों को धो देते हैं। लेकिन तभी एक मुसलमान सुअर के बदले में गाय को मारने के लिए उसके पीछे डंडा लेकर भागता है तो उसे देखकर बख्शी जी कहते हैं ''लगता है शहर पर चीलें उड़ेंगी। आसार बुरे हैं।''[10] बख्शी जी रिचर्ड से कहते हैं कि ''अगर शहर में पुलिस गश्त करने लगे, जगह–जगह फौज की चौकियां बिठा दी जाये दंगा फसाद नहीं होगा, स्थिति काबू में आयेगी।''[11] लेकिन कोई भी कार्यवाही सरकार द्वारा नहीं की जाती और दंगे तेजी से भड़क उठते हैं। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो गये है। जरनैल जो कि सच्चा कांग्रेसी कार्यकर्ता था, जगह–जगह जाकर अपनी तकरीरें करता है–'' साहिबान में आपसे कहता हूँ कि हिन्दु मुसलमान भाई भाई है, शहर में फिसाद हो रहा है, आगजनी हो रही है और उसे कोई रोकता नहीं। डिप्टी कमिश्नर अपनी

मेम को बाँहों में लेकर बैठा है। और मैं कहता हूँ कि हमारा दुश्मन अंग्रेज है। गांधी जी कहते हैं कि वही हमें लड़ाता हैं और हम भाई भाई हैं। हमें अंग्रेजों की बातों में नहीं आना चाहिए ओर गांधी जी का फर्मान है कि पाकिस्तान मेरी लाश पर ही बनेगा। मैं भी कहता हूँ पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, हम सब एक हैं, हम भाई–भाई है, हम मिलकर रहेंगे।''[12] तभी आस–पास खड़े लोगों में से किसी एक ने उसका सिर लाठी से फोड़ कर उसे मार डाला। इस तरह कांग्रेस के द्वारा किये जा रहे शान्ति के प्रयासों में जरनैल की जान चली जाती है। पाँच दिन के दंगो के बाद सरकार द्वारा अमन चैन लाने की कार्यवाही की जाती है तो बख्शी जी मन ही मन सोचने लगते है– ''फिसाद करवाने वाले भी अंग्रेज, फिसाद रोकने वाले भी अंग्रेज, भूखे मारने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज, जब से फिसाद शुरू हुये थे बख्शी जी के दिमाग में धूल सी उड़ने लगी थी. बस इतना ही बार बार कहते रहे ''अंग्रेज फिर बाजी ले गया।[13] अमन चैन लाने के लिये विविध धर्मो के लोगों की कमेटी बना दी जाती है लेकिन लोगों के मनों से हिन्दु मुस्लिम का भेद समाप्त नहीं होता। सभी कार्यकर्ता आपस में ही उलझते रहते हैं।

मुस्लिम लीग का कटटरपंथी रवैया :

मुस्लिम लीग धार्मिक भावनाएँ फैलाकर मुसलमानों को भड़का रही थी। कांग्रेस पार्टी में जो मुसलमान कार्यकर्ता थे उनको मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता तथा अन्य मुसलमान गद्दार या कांग्रेस का कुत्ता कहते थे। तभी तो रूमी टोपी वाला मुसलमान बख्शी जी से कहता है–''मौलाना आजाद हिन्दुओं का सबसे बडा कुत्ता है। गाँधी जी के पीछे दुम हिलाता फिरता है। जैसे ये कुत्ते आपके पीछे दुम हिलाते फिरते हैं..... हिन्दुस्तान की आजादी हिन्दुओं के लिये होगी, आजाद पाकिस्तान में ही मुसलमान आजाद होंगे।

मुराद अली ही वह व्यक्ति है जिसने नत्थू चमार से सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फिंकवा दिया है और सब लोग इकट्ठा होते हैं तो वह हिन्दु–मुस्लिम भाई–भाई का नारा लगाता है। वह दोगला व्यवहार करता है। उसी की हरकत के कारण इतना दंगा होता है और जब पाँच दिनों की भयंकर मारकाट के बाद जब अमन कमेटी कायम की जाती है तो वह भी उसका सदस्य बन जाता है। दूसरी तरफ शाहनवाज है जिसने अपने हिन्दु मित्र रघुनाथ के नौकर मिलखी पर अपना गुस्सा उतारा है–''डिब्बे को दोनों हाथों में उठाये शाहनवाज पीछे–पीछे चला आ रहा था जब सहसा उसके अन्दर भभूका सा उठा। न जाने ऐसा क्यों हुआ मिलखी की चुटिया पर नजर जाने के कारण, मस्जिद के आंगन में लोगों की भीड़ देखकर या इस कारण कि जो कुछ वह पिछले तीन दिनों से देखता सुनता आया था। वह विष की तरह उसके अंदर घुलता रहा था।''[15] शाहनवाज ने मिलखी की पीठ पर लात मारी तो मिलखी की गर्दन सीढ़ियों से गिरकर टूट गई और वह मर गया। इसी तरह की धार्मिक कट्टरता के कारण गाँवों में भी सिक्खों और हिन्दुओं पर जुल्म किये गये। हरनाम सिंह और उसकी पत्नी को अपना गाँव छोड़कर भागना पड़ा और मुसलमानों ने इनके घर तथा दुकान को जला दिया। हरनाम सिंह के बेटे इकबाल सिंह को मुसलमान पकड़ लेते हैं और उसे जबरन मुसलमान बनाया जाता है। इसी तरह गोल्ड़ा शरीफ के पीर बाबा जिनमें मुसलमानों की श्रद्धा है वे भी हिन्दुओं को काफिर मान कर उनसे नफरत करते हैं ''पर पीर बाबा काफिरों को हाथ नहीं लगाते काफिरों से नफरत करते है। अब वह किसी काफिर को नजदीक नहीं आने देते।''[16] इसी तरह अन्य मुसलमान भी अंग्रेजों को अपना शत्रु नहीं मानते। उनका मानना है कि ''हमारा अंग्रेजों ने क्या बिगाड़ा है ओय? हिन्दु मुसलमान की अदावत पुराने जमाने से चली आ रही है। काफिर–काफिर है और जब तक दीन पर ईमान नहीं लायेगा वह दुश्मन है। काफिर को मारना सवाब है।''[17] इसी कट्टरता के कारण हिन्दु–मुसलमान वैमनस्य बढ़ता ही गया और उसकी परिणति लोगों की हत्याओं के रूप में हुई।

IJRSSH

हिन्दुओं की प्रतिक्रियावादी नीतियों–

विभाजन से पूर्व जब माहौल साम्प्रदायिक हो उठा था। उस समय कुछ ही ऐसे लोग थे जो धर्मों में एकता स्थापित करके इन हिन्दू–मुस्लिम लोगों को समझा सके। अधिकतर संख्या अलगाववादियों की ही थी। क्योंकि उन्हें ऐसा करने के लिये कट्टरपंथियों द्वारा प्रेरित किया जाता था। ऐसे ही कट्टरपंथी है वानप्रस्थी जी, जो कि इस उपन्यास में हिन्दुत्ववादी शक्तियों को बढ़ावा दे रहे हैं। वानप्रस्थीजी आर्य समाज को मानने वाले है और उनके साथ मंत्री जी, देवव्रत, प्रधानजी, रणवीर, धर्मदेव, शम्भू तथा बोधराज है। वानप्रस्थी जी सभी से आग्रह करते है कि आने वाले दिनों में हिन्दुओं को मुसलमानों से टक्कर लेने के लिये तैयार रहना होगा। वानप्रस्थी जी कहते है–''सबसे पहले अपनी रक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिये। सभी सदस्य अपने अपने घर में एक एक कनस्तर कड़वे तेल का रखें, एक एक बोरी कच्चा या पक्का कोयला रखें। उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है, जलते अंगारे छत से फेंके जा सकते हैं।''[18] आने वाले अनजान संकट को लेकर वानप्रस्थीजी युवकों को लाठी चलाना और शत्रु पर किस प्रकार हमला करना है इन तरीकों की जानकारी देते हैं। इनकी तैयारियों को देखकर स्वाभाविक ही है कि मुसलमान भी ऐसी ही तैयारियाँ करेंगे। वानप्रस्थीजी कांग्रेस की नीतियों की भी आलोचना करते हैं– ''यह सारा कांग्रेसियों ने ही बिगाड़ा है। उन्होंने मुसलों को सिर चढ़ा कर रखा है।[19] इस प्रकार की बातें करके ये युवकों को आने वाले दिनों में जो खतरा आने वाला है उससे आगाह करते हुये बदला लेने के तरीके बता रहे हैं। मास्टर देवव्रत जी छोटे–छोटे बच्चों को इकट्ठा करके उनके मन में भी मुसलमानों के प्रति नफरत के बीज बो रहे हैं। अपने दल में शामिल करने के लिये रणबीर को छुरी से मुर्गी मारने का प्रशिक्षण देते हैं और जब वह इस परीक्षा में पास हो जाता है तो उसके माथे पर रक्त का टीका लगाकर उसका स्वागत करते हैं। वानप्रस्थी जी कहते हैं–''बात–बात पर खतरे से डरना। इसी भाव ने हमें कायर बना दिया है। इसी कारण म्लेच्छ हमारी खिल्ली उड़ाते हैं। हमारे युवकों को कराड़

और बनिया कहकर पुकारते हैं।''[20] इस प्रकार हिन्दुओं की कट्टरवादिता ने मुसलमानों के मन में भय पैदा कर दिया कि वे सुरक्षित नहीं हैं। वानप्रस्थी जी के अनुयायी इसी प्रकार लोगों को भड़काकर उनके मन में संदेह के बीज बोते रहे और लोग उनका अंधानुकरण करते हुये प्रतिशोध के रूप में गरीब तथा सीधे सच्चे गुसलमानों की हत्याएँ करने लगे।

अंग्रेजों की कूटनीतिक चालें :

भीष्म साहनी ने अपने इस उपन्यास में अंग्रेजों की मानसिकता का पर्दाफाश किया हैं। जब पांच दिनों तक लगातार रक्तपात होता हैं तो अंग्रेज चुपचाप क्यों बैठे हैं ? उस समय अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड था जिसकी मानसिक स्थिति का आकलन करते हुये अंग्रेजों की कार्य पद्धति पर लीजा (रिचर्ड की पत्नि) द्वारा ही व्यंग्य किया जाता है। जब हिन्दू–मुस्लिम–सिख इकट्ठे होकर इन दंगों पर अंकुश लगाने के लिये आते हैं। रिचर्ड आगे से मुस्करा कर कहते है–''सरकार तो बदनाम है मैं अंग्रेज अफसर हूँ. ... ताकत तो इस वक्त पण्डित नेहरू के हाथ में है।''[21] रिचर्ड को इतिहास में रूचि है इसी कारण वह लीजा को कहता है– ''देश अपना नहीं है लीजा, पर इतिहास का विषय तो अपना है।''[22] जब लीजा को पता चलता है कि इस समय हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच तनाव है तो वह रिचर्ड को समस्या सुलझाने के लिये कहती है तो रिचर्ड कहता है– ''उनसे कहूंगा तुम्हारे धर्म के मामले तुम्हारे निजी मामले हैं इन्हें तुम्हें खुद ही सुलझाना चाहिये। सरकार तुम्हारी मदद करने को तैयार है।''[23] लीजा रिचर्ड से पूछती है कि अगर ये लोग आपस में लड़ेंगे तो तुम्हें तो कोई खतरा नहीं है। अंग्रेजों की इस सोच को साहनी ने साक्षात उन्हीं के शब्दों में चित्रित किया है। रिचर्ड नहीं चाहता कि दोनों जातियों मे मेलमिलाप हो। इसी कारण वह कोई प्रशासनिक सहायता समय पर नहीं देता। लीजा जब जानना चाहती है कि दोनों धर्मों को मानने वालों में क्या समानता हैं तो रिचर्ड कहता है– ''डार्लिंग हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौनसी समानता पाई है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती

हैं कि वे किन–किन बातों में एक दूसरे से भिन्न हैं।''[24] अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति को स्पष्ट रूप से अंकित किया है। पंजाब में हो रहे दंगों को अंग्रेज सरकार आराम से देख रही थी। इन दंगों से अंग्रेजों को कोई नुकसान नहीं था। इसी कारण जब लीजा रिचर्ड से इनके झगड़े के विषय में जानना चाहती हैं तो रिचर्ड कहता है कि ''धर्म के नाम पर आपस में लड़ते हैं देश के नाम पर हमारे साथ लड़ते हैं लेकिन प्रत्युत्तर में अंग्रेजों की पोल खोलती हुई कहती है बहुत चालाक न बनो रिचर्ड मैं सब जानती हूँ देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते है और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।''[25] भीष्म साहनी ने तमस के माध्यम से दर्शाया हैं कि साम्प्रदायिक तनाव को पैदा करने तथा जनता को लड़ाने का कार्य अंग्रेजों द्वारा किया जाता था। अंग्रेज चाहते थे कि अगर जनता इसी प्रकार जातिगत झगड़ों में उलझी रही तो हमारा शासन कभी समाप्त नहीं होगा। जब पाँच दिन तक लगातार रक्तपात, झगड़ें, बलात्कार होते रहे तो सरकार इस ओर कोई ध्यान नहीं देती और पांचवे दिन जाकर कर्फ्यू लगाया जाता हैं और लोग फिर अंग्रेज सरकार के गुणगान करने लगते हैं। लेकिन कोई भी यह समझने का प्रयास नहीं करता हैं कि ये अंग्रेजों की ही चाल है। 'तमस' उपन्यास में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी भावनाओं तथा कूटनीतिक चालों को अंग्रेज पात्र रिचर्ड के माध्यम से स्पष्ट किया हैं।

सिक्खों की मनःस्थिति का चित्रण:

उपन्यास के दूसरे खण्ड में जहाँ शहर के आस–पास के गांवों का चित्रण है, उनमें सिक्ख पात्र सर्वाधिक पाये गये है। हरनाम सिंह तथा बन्तो, जो कि गाँव में अकेले सिक्ख है उन्हें अपना सब कुछ छोड़कर पलायन कर जाना पड़ता हैं। इनके बेटे इकबाल सिंह को जबरन मुसलमान बनाया जाता है इसके अतिरिक्त किशन सिंह, प्रीतम सिंह, हरी सिंह, निहंग सिंह, ग्रन्थी साहिब, प्रीतम सिंह बजाज, भगत सिंह पंसारी तथा अन्य सिंहों का चित्रण किया हैं जो इस समय मुसलमानों के हमलों से बचने के लिये गुरुद्वारे में इकट्ठा हुये है। गुरुद्वारा खचाखच भरा हुआ है और संगत मस्ती में

झूम रही थी–''संगत में सबके हाथ जुड़े हुये, आँखें बंद और सिर वजद में हिलते हुये। कोई व्यक्ति हाथ पर ताल दिये जा रहा था। यह कुर्बानी की आवाज शताब्दियों के फासले लांघकर फिर से गूंज रही थी। तीन सौ साल पहले भी ऐसा ही गीत दुश्मन से लोहा लेने से पहले गाया जा रहा था। आत्म–बलिदान की भावना से ओत–प्रोत वे सब कुछ भूले हुये थे। इस विलक्षण क्षण में उनकी आत्मा अपने पुरखों की आत्मा से जा मिली थी, वे फिर से जैसे अतीत में जा पहुँचे थे। तुर्कों के साथ लोहा लेने का समय फिर से आ गया था। सिक्ख जाति पर फिर से संकट आया है, फिर से तुर्कों की ओर से आया है।''[26]

गाँव में सिक्खों की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा कम थी। ऐसे समय में आवश्यकता थी कि किसी प्रकार अपनी जान बचा सकें क्यों कि उनके पास पर्याप्त मात्रा में हथियार भी नहीं थे लेकिन वे अपने गुरूओं की शहादत को स्मरण करके अपना बलिदान करने की भावना रखते थे– ''हमारे इम्तहान का वक्त आ गया है, हमारी आजमाइश का वक्त आ गया है। महाराज इस वक्त एक ही हुक्म है–कुरबानी। कुरबानी। कुरबानी।''[27] सोहन सिंह नाम का व्यक्ति इनमें सुलह करवाने की कोशिश करता हैं तो ये उसकी बात नहीं सुनते और उसे वहाँ से भगा देते हैं। सिक्खों के मन में मुसलमानों को लेकर तुर्कों वाली भावनाएँ थी तो मुस्लिमों ने भी कुछ इसी प्रकार भाव व्यक्त किये थे–''तुर्कों के जेहन में भी यही था कि वे अपने पुराने दुश्मन सिक्खों पर हमला बोल रहे हैं और सिक्खों के जेहन में भी वे दी सौ साल पहले के तुर्क थे जिनके साथ खालसा लोहा लिया करते थे। यह लड़ाई ऐतिहासिक लड़ाइयों की शृंखला में एक कड़ी थी। लड़ने वालों के पाँव बीसवीं सदी में थे, सिर मध्ययुग में।''[28]

इस प्रकार यह युद्ध दो दिन और दो रात तक चला रहा। स्त्रियों को अपनी इज्जत आबरू बचाने का भय सता रहा था। जसबीर की अगुवाई में सैंकड़ों स्त्रियों ने अपने बच्चों सहित कुएँ में जाकर छलागं लगाकर अपनी तथा बच्चों की सामूहिक रूप से इहलीला समाप्त कर ली। लाशों से कुआं भर गया। गुरुद्वारे में चार सिक्ख बैठे

IJRSSH

अपनी मौत का इंतजार कर रहे थे। तभी अंग्रेज का हवाई जहाज आ जाने दंगों पर रोक लग जाती हैं और सारा कुछ गंवाकर भी किशन सिंह कहता है– ''दो दिन पहले आ जाते साहब, तो हमारा इतना नुकसान नहीं होता, मगर कोई फिक्र नहीं।''[29] 'तमस' ही अकेला ऐसा उपन्यास है जिसमें सिक्खों की पीड़ा को साहनी ने उकेरा है।

सामान्य जन की पीड़ाः

भीष्म साहनी ने इसमें सामान्य जन की पीड़ा को भी व्यक्त किया हैं। आम जनता को इन झगड़ों में सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ता है क्योंकि अमीर व्यक्ति अपने धन, बल से विपरीत स्थितियों से भी बच निकला है। नत्थू चमार जो कि जानता नहीं था कि सुअर को मरवाकर उसका क्या प्रयोग किया जायेगा। नत्थू इस घटना से विचलित हो जाता है और कभी–कभी स्वयं को ही दोषी मानने लगता है। सामान्य व्यक्ति राजनीतिज्ञों सी चतुराई नहीं रखता, इसलिये कष्ट उठाता है। मजदूर वर्ग जो मजदूरी करके पेट भरता है उसके लिये आजादी के कोई मायने नहीं है। वह कहता है' ''बाबू जी ने कहा आजादी आने वाली है। मैंने कहा, आये आजादी, पर हमें क्या? हम पहले भी बोझा ढ़ोते है, आजादी के बाद भी बोझा ढ़ोयेंगे।''[30] और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो आने वाली विपत्तियों को भगवान की देन मानकर या भाग्य का लिखा मानकर बैठ जाते हैं। ऐसी आत्महीनता वाली बातें भी साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में सहयोग देती हैं। इस साम्प्रदायिकता में कुछ लोग ऐसे भी थे, जिनमें अभी मानवीयता शेष थी। राजो जो कि मुसलमान स्त्री है। वह अपने पति तथा बेटे को समझा–बुझा कर शरण लेने वाले हिन्दू परिवार की रक्षा करती हैं और जाते हये उनकी बंदूक तथा गहनों की पोटली भी वापिस कर देती हैं। इसी तरह एक दृश्य में एक पंडित तथा उसकी पत्नी का हैं। इनकी जवान बेटी प्रकाशो को कोई उठाकर ले गया हैं लेकिन अब जब झगडे समाप्त हो जाते हैं तो ये सोचते हैं कि अब बेटी वापिस आकर भी क्या करेगी–''अब वह हमारे पास आकर क्या करेगी जी, बुरी वस्तु जो उसके मुँह में उन्होंने पहले से डाल दी होगी।''[31] माता–पिता ने भी इस माहौल में अपने वात्सल्य

IJRSSH

को मानो तिलांजलि दे दी थी। सभी को अपनी–अपनी जान की परवाह थी। जिन मुसलमानों ने इस फसाद का फायदा उठाया था। वे अपने–अपने कारनामों को बड़े गर्व के साथ बयान कर रहें थे मानो उन्होंने वीरतापूर्ण कार्य किया हो:– ''हिन्दुओं की एक लड़की अपने घर की छत पर चढ़ गई। हमने देख लिया जी। सीधे दस–बारह आदमी उसके पीछे छत पर पहुँच गये। बारी–बारी से सभी ने उसे दबोचा । जब मेरी बारी आयी तो नीचे न हूँ, न हाँ, वह हिले ही नहीं।''[32]

लेखक ने उपन्यास में विभाजन पूर्व की विभीषिका को तटस्थ होकर अंकित किया हैं जिसमें शहर के साथ–साथ गाँवों में फैली साम्प्रदायिक विद्वेष की भावना को दिखाया गया है। लोग आपसी रिश्तों को भूलकर किस प्रकार रक्तपात कर रहे थे लेकिन अंग्रेज से डरते थे। तभी तो जब अंग्रेज हवाई जहाज से गाँव के चक्कर लगाता हैं तो दंगे अपने–आप बंद हो जाते थे। लोगों को अंग्रेजों का भय हैं लेकिन नाते–रिश्तों की कोई परवाह नहीं हैं। लेखक ने विभाजन की पीड़ा को स्वयं भोगा है इसलिये उनका उपन्यास यथार्थ के अधिक समीप है। कृष्णा सोबती के अनुसार– ''तमस जिन्दगी की छोटी–बड़ी लड़ाइयों की कहानी नहीं। यह विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटना का, संघर्ष का वह महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसमें एक साथ लाखों लोग अपने–अपने ठिकानों से उखड़े थे। भीष्म खुद उस तूफान की चपेट में थे जिसे बंटवारे का नाम दिया जाता है। तमस इस बात का सबूत है कि एक ईमानदार लेखक की तरह भीष्म उस भोगे दर्द को दूरियों में से लाते चले गये हैं और आखिरकार बंटवारे का वह ब्यौरा पेश कर सके जो अपने सुधरे शिल्प और प्रस्तुतिकरण में महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रहेगा।[33]

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के अनुसार– 'तमस' हिन्दी का अकेला उपन्यास है जिसने साम्प्रदायिकता के विविध पहलुओं को पूरी गहराई और सफाई के साथ प्रस्तुत किया है। इससे भी बड़ी विशेषता इस उपन्यास में उन सूक्ष्म मन स्थितियों का चित्रण है जो भीतर से न चाहते हुये भी साम्प्रदायिकता की वहशी आँधी में इन्सान को हैवान बनने

IJRSSH

पर विवश करती हैं और हैवान को इन्सान।''[34] भीष्म साहनी की कलम से लिखा गया यह उपन्यास आजादी के पहले भड़काई गई साम्प्रदायिक हिंसा का चित्रण करता हैं तथा मनुष्य की हैवानियत का, कुछ लोगों की बची मानवीयता का सशक्त चित्रण किया गया हैं। विश्वनाथ तिवारी के अनुसार'' भीष्म साहनी विचारों से मार्क्सवादी और प्रतिवद्ध लेखक हैं। लेकिन उनकी विशिष्टता यह हैं कि वे अपने कथाकृतियों में कहीं भी अपने विचारों को ऊपर से आरोपित नहीं करते, न उनकी कृतियों से ही प्रचार की गंध मिलती है। यही विशेषता 'तमस' उपन्यास में भी है। इस उपन्यास में लेखक आदि से अंत तक पूर्ण तटस्थता के साथ स्थितियों का वस्तुनिष्ठ तार्किक चित्रण विश्लेषण करता है।''[35] स्वयं लेखक भीष्म साहनी ने लक्ष्मी शंकर वाजपेयी को दिये साक्षात्कार में कहा था–''मैं साम्प्रदायिकता की समस्या के कारण ही घर से बेघर हुआ और उसी के कारण मैंने तमस लिखा। मुझे लगता हैं कि साम्प्रदायिकता की समस्या कम होने के बजाय और भी अधिक जटिल हो गई है। इसमें नये–नये आयाम जुड़ गये हैं, जो और भी भयानक है। आतंकवाद की समस्या जोर पकड़ गई है। पहले दंगा होता था, तीन–चार दिन में शांत हो जाता था। अब सारा समय तनाव बना रहता है। विभाजन के दिनों में ज्यादा से ज्यादा लाठी, तलवार का प्रयोग होता था, अब तो बम और आर. डी.एक्स जैसे भंयकर विस्फोट इस्तेमाल होने लगे हैं। पहले इक्का–दुक्का लोग मारे जाते थे, अब दर्जनों एक ही बार मर जाते है। अगर यही जातिवाद और धार्मिक कट्टरता बढ़ती गई तो बहुत दुर्भाग्य पूर्ण होगा।''[36]

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डा. पीताम्बर सरोदे: आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना, पृ.123
2. भीष्म साहनी तमस, आवरण पृष्ठ
3. भीष्म साहनी : पृ० 122
4. भीष्म साहनी : पृ० 140

5. भीष्म साहनी : पृ० 132—133
6. भीष्म साहनी : पृ० 207
7. भीष्म साहनी : पृ० 75—76
8. भीष्म साहनी : पृ० 32
9. भीष्म साहनी : पृ० 56
10. भीष्म साहनी : पृ० 56
11. भीष्म साहनी : पृ० 75
12. भीष्म साहनी : पृ० 141
13. भीष्म साहनी : पृ० 223
14. भीष्म साहनी : पृ० 32
15. भीष्म साहनी : पृ० 132
16. भीष्म साहनी : पृ० 100
17. भीष्म साहनी : पृ० 179
18. भीष्म साहनी : पृ० 61
19. भीष्म साहनी : पृ० 62
20. भीष्म साहनी : पृ० 63
21. भीष्म साहनी : पृ० 74
22. भीष्म साहनी : पृ० 35
23. भीष्म साहनी : पृ० 47
24. भीष्म साहनी : पृ० 45
25. भीष्म साहनी : पृ० 44
26. भीष्म साहनी : पृ० 170
27. भीष्म साहनी : पृ० 175

IJRSSH

28. भीष्म साहनी : पृ० 207

29. भीष्म साहनी : पृ० 217

30. भीष्म साहनी : पृ० 98

31. भीष्म साहनी : पृ० 238

32. भीष्म साहनीः पृ० 211

33. कृष्णा सोबती : हम हशमत, पृ० 29

34. डा.पीताम्बर सरोदेः आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना, पृ. 123

35. संपा निर्मला जैन नित्यानंद तिवारीः हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद, पृ० 82

36. संपा. विद्यानिवास मिश्रःसाहित्य अमृत, साक्षात्कार, मासिक दिसम्बर 2000, पृ० 43

IJRSSH